SAMVAD E-JOURNAL
ISSN (Online) : 2583-8334
(International Peer-Reviewed Refereed Journal)
Volume 2, Issue-2, April to June : 2024
Published by Rangmati Publication http://www.rangmatipublication.com/

डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' की कहानियों में उत्तराखंड त्रासदी की मार्मिक अभिव्यक्ति

डॉ० राम भरोसे,

बीज शब्द- संस्कृति, धर्म, पर्वतीय जीवन, महाप्रलय, त्रासदी, आपदा, भीषण, केदारनाथ, देवालय, तीर्थ स्थल, श्रद्धालु

सारांश - प्रस्तावना - भारत एक धर्म प्रधान देश हैं। धर्म को प्राण तथा धर्म प्रधान संस्कृति को इस देश की आत्मा माना गया है। इस पवित्र धरा पर अनेक जाति,धर्म व संप्रदाय के लोगों के हृदय में आदिकाल से ही धर्म के प्रति गहरी आस्था रही हैं।इस आस्था को विकसित करने में हमारे ऋषि-मुनियों,महर्षियों,साधु-संतों व महापुरुषों का न केवल बहुत बड़ा योगदान रहा हैं अपितु उन्होंने अपनी कठोर तपस्या व साधना के माध्यम से प्राप्त सिद्धियों के स्वर्णिम प्रकाश में सृष्टि के विभिन्न रहस्यों को जानने और समझने का प्रयास भी किया हैं। ईश्वरीय अदृश्य सत्ता पर अटूट विश्वास रखते हुए धर्म के वास्तविक स्वरूप को स्थापित करने वाले ये साधु-संत और महात्मा सनातनी होने के परिणामस्वरूप सांसारिक जीवों को पूजा-पाठ कर पवित्र तीर्थ स्थलों पर भ्रमण करने तथा परमपिता परमेश्वर के दर्शनों का लाभ उठाने की ओर प्रेरित करते हैं। भारत देश में ऐसे अनेक पवित्र तीर्थ स्थल और देवालय हैं जो हृदय में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कर मनुष्य की शारीरिक और मानसिक शक्तियों में अभिवृद्धि करते हैं।

उत्तरी भारत के पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक,हिन्दू धर्म की आस्था का प्रतीक, समृद्ध इतिहास व ऐतिहासिक अभिलेखों का साक्षात् प्रमाण,धार्मिक महत्वता से परिपूर्ण, नैसर्गिक व अलौकिक सौंदर्य का पर्याय, ऐसा ही एक पवित्र तीर्थ स्थल केदारनाथ भारत के उत्तराखण्ड राज्य के रुद्रप्रयाग जिले में स्थित भगवान शंकर का प्रसिद्ध मंदिर है। देवभूमि उत्तराखण्ड में हिमालय पर्वत के अंक में केदारनाथ मन्दिर को बारह ज्योतिर्लिंगों में शामिल होने के साथ-साथ भारत के चार पवित्र तीर्थस्थलों यानी चार धाम और पंच केदार के रूप में भी गौरव प्राप्त हैं।इस प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग की स्थापना के इतिहास का यदि सिंहावलोकन किया जाये तो अनेक उल्लेखनीय तथ्य,धार्मिक मान्यताएं एवं किंवदंतियां हमारे सम्मुख प्रकट होती हैं जिनमें से कुछ निम्नानुसार हैं -

पांडवों की कथा- इस पवित्र तीर्थ स्थल के संबंध में धार्मिक मान्यता हैं कि भारत देश का प्रमुख एवं महान काव्य ग्रंथ'महाभारत' के नायक पांडु पुत्र पांडवों ने जब अपने सगे-संबंधियों को महाभारत के युद्ध में पराजित कर उनका वध कर दिया तब उन्हें अपने इस कर्म से आत्मग्लानि हुईं और अपने पापों का प्रायश्चित करने के उद्देश्य से उन्होंने केदारनाथ मंदिर का निर्माण किया। एक अन्य धार्मिक मान्यता के अनुसार भगवान शिव ने पांडवों को दर्शन देने से बचने के प्रयास में बैल का रूप धारण कर लिया जिससे पांडव उन्हें पहचान नहीं सकें परंतु केदारनाथ में पांडवों ने उन्हें पहचान कर घेर लिया। इसके बाद भगवान शिव भूमि में समा गये और केवल उनका कूबड़ ही भूमि की ऊपरी सतह पर रह गया। माना जाता हैं कि मंदिर का निर्माण उसी स्थल पर है,जहाँ भगवान शिव ज़मीन में समा गए थे।

डॉ० राम भरोसे, असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग प्रभारी), शहीद बेलमती चैहान राजकीय महाविद्यालय पोखरी (क्वीली), टिहरी-गढ़वाल-249146, उत्तराखण्ड, ई-मेल- ramharidwar32@gmail.com, मो.नं.- 9045602061

नर और नारायण की कथा - पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान विष्णु के अवतार माने जाने वाले महान एवं सिद्ध तपस्वी,ऋषि नर और नारायण ने कई वर्षों तक केदारनाथ में कठिन तपस्या की थी। उनकी कठिन तपस्या और सच्चे मन से की गयी भक्ति से भगवान शिव अत्यधिक प्रसन्न हुए और उन्होंने ऋषि नर और नारायण की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए ज्योतिर्लिंग के रूप में सदा के लिए केदार पर्वत पर वास करने का वचन दिया।

लिंगम की किंवदंती - एक अन्य

किंवदंती भी केदारनाथ मंदिर के विषय में प्रसिद्ध हैं। ऐसा कहा जाता हैं कि भगवान शिव के प्रतीक लिंगम का निर्माण पृथ्वी, वायु, जल और अग्नि तत्वों से प्राकृतिक रूप से हुआ है। इन धार्मिक मान्यताओं ने ही केदारनाथ के पवित्र स्थल को हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल और भगवान शिव के भक्तों के लिए श्रद्धा का विशाल केंद्र बना दिया है।

केदारनाथ त्रासदी -

वर्ष 2013, दिनांक 15 और 16 जून, के बीच बादलों ने जैसे क्रोधित होकर अपना प्रचंड रूप दिखाते हुए अतिवृष्टि के रूप में धरती पर ऐसा कहर बरपाया कि संपूर्ण विश्व इस भीषण तांडव को देखकर दहल उठा। ग्लेशियर के टूटने से अपने उफान पर आई मंदाकिनी नदी ने सर्वत्र तबाही मचा दी।देवभूमि कहे जाने वाले नवोदित राज्य उत्तराखंड में आई इस प्राकृतिक आपदा ने महाप्रलय का ऐसा भयानक मंजर इस संसार को दिखाया,जिसकी विगत वर्षों में आयी प्राकृतिक आपदा से कोई तुलना नहीं की जा सकती। पिथौरागढ़ से लेकर चमोली और उत्तरकाशी तक के इलाकों को अपनी गिरफ्त में ले चुकी इस आपदा से केदार घाटी में विराजित भगवान केदारनाथ की यात्रा पर गए हजारों भक्त और श्रद्धालु काल के गाल में समा गए। इस घटना की विकरालता का आकलन इस बात से लगाया जा सकता हैं कि आज भी कोई सामाजिक,सरकारी या निजी संस्था इस बात की कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं दे पायी कि कितने श्रद्धालु, पशु-पक्षी,पालतू जानवर,जंगली जीवों को इस घटना के परिणामस्वरूप अपनी जान से हाथ धोना पड़ा और कितने प्राकृतिक साधन-संसाधन इस आपदा की भेंट चढ़ गए।आज भी हिमालय पर्वत के दक्षिणी ढलान पर बसा यह सुंदर शहर आपदा की दर्दनाक कहानी को बयां कर रहा हैं। क्योंकि इस त्रासदी से नदियों और पहाड़ों का सुंदर स्वरूप न केवल विकृत हो गया अपितु आनंद व सुखपूर्वक अपना जीवनयापन कर रही अवाम के घर भी खंडहरों में परिवर्तित
हो गए।

'निशंक' की कहानियों में उत्तराखंड त्रासदी की मार्मिक अभिव्यक्ति -

उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री,महान साहित्यकार,कथाकार,पत्रकार और संस्कृतिवेत्ता डॉ.रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने मौत का तांडव दिखाने वाली इस केदार घाटी में सर्वप्रथम पहुंचकर जहां एक ओर अपने राजनीतिक धर्म का पालन किया वहीं जलमग्न हो चुकी घाटी के मर्मस्पर्शी पक्षों को उकेरने वाली घटनाओं का साक्षात् प्रमाण अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत कर श्रेष्ठ साहित्यकार होने के दायित्व का भी उचित निर्वहन किया। 'केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानी' इस शीर्षक से आपकी 21 कहानियां प्रकाशित हुई। इस कहानी संग्रह की भूमिका में डॉ.'निशंक'लिखते हैं-"मैंने इस आपदा को बहुत करीब से देखा,शायद केदारनाथ में आपदा आने के तुरंत बाद वहां पहुंचने वाला मैं ही पहला व्यक्ति रहा हुंगा। केदारनाथ से ही सबसे पहले देश के प्रधानमंत्री तथा प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री को हजारों लोगों के हताहत होने की जानकारी दी गई तथा थलसेना एवं वायुसेवा और एन.डी.आर.एफ की टीमों को तत्काल भेजने का आग्रह भी किया,ताकि दलदल तथा पहाड़ियों में फंसे हुए लोगों को निकाल कर उनके प्राणों की रक्षा की जा सकें। मैंने अपनी आंखों से वह मंजर देखा हैं,जिसे कोई सपने में भी देखने की कल्पना नहीं कर सकता। जान बचाने के लिए मैंने वहां लोगों को दौड़ते,चीखते,चिल्लाते हुए देखा हैं।यत्र-तत्र लाशों का अंबार लगा हुआ था। अपनों को अपने सामने ही काल का ग्रास बनते देख,लुटे और ठगे से लोगों के करुण क्रंदन ने मुझे अंदर तक हिलाकर रख दिया था। विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह सत्य हैं।सारा दृश्य जैसे किसी सपने के समान था। उसके बाद भी मैं तीन बार आपदाग्रस्त क्षेत्र में गया और श्मशान बन चुके केदारनाथ धाम की पैदल यात्रा की।

'मैंने जो कुछ वहां देखा और लोगों से मिलकर जाना,उन्हीं घटनाओं को इस पुस्तक की कहानियों का विषय बनाया हैं।एक प्रकार से यह केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियां हैं,किंतु अपरिहार्य कारणों से कहीं-कहीं पात्रों और उनके निवास-स्थान के नाम बदल दिए गए हैं।"१

वास्तव में निशंक जी का यह कहानी संग्रह उत्तराखंड में आई प्राकृतिक आपदा के विभिन्न रूपों का परिचय देते हुए मनुष्य के भीतर छिपे ईश्वर और शैतान के दर्शन कराने में सक्षम साबित हुई है। मनुष्य जीवन के सभी रंगों का समावेश करने के कारण इस संग्रह की सभी कहानियां कालजयी बन गई हैं। संग्रह की प्रथम कहानी 'और में कुछ नहीं कर सका' हैं।मानव और पशु प्रेम की यह कहानी मार्मिकता और संवेदना से परिपूर्ण हैं। कथा का नायक 'डब्बू' नाम का अश्व अपने मालिक दयाल के परिवार का जीवन निर्वाह करने में एक बेटे की तरह अपना सहयोग करता था।भगवान केदारनाथ की यात्रा पर आए अनेक भक्त और श्रद्धालुओं की सेवा के लिए दयाल उसे प्रतिवर्ष अपने साथ ले जाया करते थे। मां और पत्नी सहित दयाल का पूरा परिवार 'डब्बू' को अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करता था। देवभूमि में हुएं भीषण जलप्रलय ने जब दयाल को अपना आलिंगन देकर मौत की नींद सुला दिया तब 'डब्बू' की अपने मालिक के प्रति उपजी भावना और छटपटाहट का चित्रण कथाकार निशंक ने जिन शब्दों के माध्यम से कहानी में किया हैं वह हृदय को करूणा और संवेदना से भर देता हैं - *"डब्बू अपराध बोध सा महसूस किए रोता रहा। उसकी आंखों से बहते अश्रुओं ने सुशीला को उसकी अनकही भाषा समझा दी।"२*

कहानी संग्रह की एक अन्य कहानी 'वो देख रहा है', केदार घाटी में हुए जल-प्रलय की भयावता के बीच मानवीय मूल्यों को जीवित करने के साथ-साथ पर्वतीय संस्कारों का भी यथार्थ के धरातल पर चित्रण करती हैं। लखन नाम के संवेदनशील युवा के मध्य से डॉ. 'निशंक ने मनुष्य के अंतर्मन में पलने वाले 'ईश्वर और शैतान'के बीच के संघर्ष में ईश्वर की विजय दिखाकर पहाड़ी संस्कृति को जिस जीवटता और जीवंतता के साथ प्रस्तुत किया हैं,वह अतुलनीय हैं। एक गुजराती महिला और हृदय रोग से पीड़ित उसके पति को बचाकर लखन ने मानवता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया हैं क्योंकि इस संसार में ईश्वर की सर्वोत्तम कृति मनुष्य हैं और किसी मनुष्य के प्राण बचाना सच्चे मन से इस ईश्वर की सेवा करना हैं। लखन की संवेदनशीलता और मानवता को डॉ.'निशंक' में इन पंक्तियों में साकार किया हैं-*"अपने मुख पर गर्व और सुकून की आभा लिए भगवान केदारनाथ को मन-ही-३मन प्रणाम करके लखन फिर अपनी कंडी उठाकर चल दिया किसी और पीड़ित की मदद के लिए।"३*

संकलन की एक और श्रेष्ठ कहानी 'मुआवजा' हैं,जिसमें पर्वतीय संघर्षों को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करते हुए डॉ.'निशंक' धनाड्य वर्ग की विकृत मानसिकता का चित्रण करते हैं। जब कोई प्राकृतिक आपदा घटती हैं तो उसके पश्चात सरकारी होने' बंदरबाट' भी हमारे सिस्टम का हिस्सा है। इसे भी सच्चाई के साथ निशंक अपनी कहानी में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार उत्तराखंड त्रासदी पर लिखी गई निशंक की कहानियों में मानवीय संवेदना और मार्मिकता का अध्ययन किया जाएं तो यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता हैं कि सभी कहानियां हृदय को इस प्रकार से छूती हैं कि पाठकों को स्वयं इस भीषण आपदा के साक्षी होने का आभास होने लगता हैं और वे इन्हीं घटनाओं की संवेदना को अपने व्यक्तिगत जीवन में जीने का प्रयास करने लगता हैं।

'लौट आया हूं' भी ऐसी ही एक मार्मिक कहानी हैं जिसमें निशंक जी पुरोहित युवा के माध्यम से पहाड़ी जनजीवन में व्याप्त होने वाली गरीबी,बेरोजगारी, रूढ़िवादिता और अंधविश्वास जैसी समस्याओं को समाज के सामने लाने का प्रयास करते हैं। अपनी गर्भवती पत्नी को जब पुरोहित घर छोड़कर केदारनाथ जाते हैं और पत्नी बेटे को जन्म देती हैं तो उस बच्चे को सौभाग्य हीन और निर्भागी मान कर ताना दिया जाता हैं लेकिन जब मौत के मुंह से बचकर पुरोहित युवा वापस घर लौट जाता हैं तो तथाकथित समाज के उन्हीं लोगों की दृष्टि बदलने में लेश मात्र भी देर नहीं होती - *"अब माहौल बदला तो वहां खड़ी महिलाओं के विचार भी बदले। थोड़ी देर पहले जो महिलाएं उस नन्हीं सी जान को निर्भागी बता रही थी,वहीं अब उसे साक्षात केदारनाथ का अवतार मान रही थीं कि जिसने विषम परिस्थितियों में सकुशल एवं स्वस्थ जन्म लिया और पिता को ही मौत के मुंह से सकुशल वापस ले आया।"४*

'प्रलय के बीच'भी केदारनाथ त्रासदी पर लिखी डॉ.रमेश पोखरियाल'निशंक' की एक ऐसी किताब हैं जिसमें उन्होंने अपने साहस,धैर्य,संवेदना और सहानुभूति को मर्म का स्वर देने का प्रयास किया हैं। यह रचना पर्वतीय प्रांतों की वेदना और मानवीय त्रासदी को व्यक्त करने वाला ऐसा हवनकुंड हैं जिसे कोई यज्ञ करने वाला उपयोग में नहीं लाना चाहता। किसी बड़ी विपदा, आघात और दुःख के समय मौन धारण करने की अपेक्षा उस दुःख में पीड़ितों के साथ साश्रु खड़े होकर उसे अपनी भाषा के माध्यम से व्यक्त करने की शक्ति,क्षमता और साहस निशंक जैसे महान साहित्यकार का ही हो सकता हैं। आपकी भाषा को पढ़कर ऐसा प्रतीत होता हैं जैसे आप सही मायने में जनता के बीच एक सच्चे और सहज समाजसेवी के रूप में उनका दर्द बांटने के लिए ही अवतरित हुए। एक उदाहरण से यह स्पष्ट होता हैं - *'कल- कल करती मंदाकिनी की स्वच्छ और निर्मल धारा के किनारे हरे भरे वृक्षों के बीच से गुजरती हुई यह घुमावदार सड़के कितनी सुंदर लगती थीं। छोटे-छोटे कस्बों और बाजारों से होते हुए यात्रा करने का अद्भुत रोमांच मिलता था,यहां किंतु आज इन्हीं सड़कों और बाजारों की स्थिति देखकर दिल फटा जा रहा था। जल-प्रलय आकर चली भी गई किंतु अपने पीछे छोड़ गई बर्बादी की ये निशानियां। बीहड़ बस्तियां, वीरान बाजार और मलबे से पट चुकी सड़कें। मैं कल्पना कर सकता हूं उस काली रात और काले दिवस की,जब लोगों ने अपना सब कुछ गवा दिया था।"*५

निष्कर्ष - निष्कर्षत: यह यह कहा जा सकता हैं कि भारत के इतिहास में सबसे खौफनाक साबित होने वाली केदारनाथ त्रासदी में जिन ज्ञात और अज्ञात लोगों ने अपनी जान गंवाई, जिनके मृत शरीरों को अंतिम संस्कार का सौभाग्य भी प्राप्त नहीं हो पाया, जिनके घरों का दीपक सदैव के लिए बुझ गया,उनकी स्मृति को समर्पित करते हुए डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक' ने अपनी कहानियों में न केवल इस त्रासदी को मार्मिकता से उकेरा हैं अपितु इस आपदा में हुए प्रलय के दृश्य,कुदरत का खौफ,जीवन और मौत के बीच संघर्ष,लाशों का अंबार,हृदय को भयाक्रांत कर देने वाले मंजरों एवं वीरान पड़ी सड़कों और बाजारों की ऐसी सच्ची तस्वीरें प्रस्तुत की हैं जिससे पाठक वर्षों तक आपदा पीड़ितों से खुद को जुड़ा हुआ महसूस कर सकेंगे। केदारनाथ घाटी में हुई त्रासदी के समय डॉ.'निशंक' ने हालात की भयावता और गंभीरता को सभी के समक्ष रखते हुए अपनी सामाजिक उद्यमिता का परिचय केवल कागज के टुकड़ों पर नहीं बल्कि अपनी कार्य करने की शैली के माध्यम से भी प्रस्तुत किया। उत्तराखंड त्रासदी का जो मार्मिक चित्र डॉ.रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने अपनी कहानियों में खींचा हैं वह रोंगटे खड़े कर देने वाला हैं।अपने राजनीतिक जीवन से ऊपर उठकर इस आपदा के संबंध में जो तथ्य एवं सत्य उन्होंने उजागर किए हैं बिना लाग-लपेट किए हैं। वास्तव में किसी त्रासदी के संस्मरण पर कोई किताब लिखना या उसे अपनी कहानियों का विषय बनाकर समाज के सम्मुख रखना उस त्रासदी को याद करने के साथ-साथ पुनः भय, संघर्ष, पीड़ा, वेदना और दर्द को भोगने जैसा हैं।

संदर्भ सूची -

1- 'केदारनाथ आपदा की सच्ची कहानियां', डॉ.रमेश पोखरियाल 'निशंक', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली,2014, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-8

2- 'और मैं कुछ नहीं कर सका, 'डॉ. रमेश पोखरियाल'निशंक', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली-2014, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-19

3- 'वो देख रहा है', डॉ.रमेश पोखरियाल'निशंक', प्रभात प्रकाशन,नई दिल्ली-2014, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-27

4- 'लौट आया हूं, डॉ.रमेश पोखरियाल'निशंक', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली-2014, प्रथम संस्करण, पृष्ठ-52

5- 'प्रलय के बीच, डॉ.रमेश पोखरियाल निशंक, डायमंड बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, प्रकाशन वर्ष-2015, पृष्ठ-180